

रिटायरिंग-रूम की छूत पर

“दोस्तो, मेरी कहानियों पर जो आपके प्यार भरे मेल आते हैं इसके लिए आपको बहुत-बहुत धन्यवाद !हाँ एक बात मुझे आपसे भी कहना है कि कृपया कहानी में वर्णित... [\[Continue Reading\]](#) ...”

Story By: (viveksdkp)

Posted: Wednesday, August 8th, 2012

Categories: [कोई मिल गया](#)

Online version: [रिटायरिंग-रूम की छूत पर](#)

रिटायरिंग-रूम की छूत पर

दोस्तो, मेरी कहानियों पर जो आपके प्यार भरे मेल आते हैं इसके लिए आपको बहुत-बहुत धन्यवाद !हाँ एक बात मुझे आपसे भी कहना है कि कृपया कहानी में वर्णित लड़कियों के मोबाईल नंबर की मांग ना करें। एक-आध को छोड़कर मेरी अधिकांश कहानियाँ काल्पनिक होती हैं, आप तो बस कहानियों के मजे लो।

यह कहानी मेरे एक बहुत ही सौभाग्यशाली सफर की कहानी है।

मुझे अपने काम के सिलसिले में अमेठी जाना पड़ा। मैं सवेरे आठ बजे स्टेशन पर उतरा। मैं अमेठी पहली बार गया था तो मैंने सोचा कि होटल के बजाय स्टेशन के रिटायरिंग में ही ठहर जाऊँ।

ट्रेन से उतरने के बाद मैंने रिटायरिंग रूम का पता किया तो जानकारी मिली कि स्टेशन बिल्डिंग के ही दूसरी मंजिल पर दो ए.सी. और दो नॉन ए.सी. कमरे और एक डोरमेट्री हैं सिर्फ !

किन्तु चारों कमरे बुक थे। किसी नेता ने चार दिनों के लिए बुकिंग करवाई थी। लेकिन रेलवे कर्मचारी ने बताया कि डोरमेट्री में जगह मिल सकती है। मैं देखने गया तो एक हॉलनुमा कमरे में सिर्फ छः बेड लगे हुए थे और सारे खाली थे। उन लोगों ने कहा कि आमतौर पर रिटायरिंग रूम भी खाली ही रहता है मगर इत्तेफाक से रूम अभी मिल नहीं सकता। खैर मैंने डोरमेट्री में बिस्तर की बुकिंग के बारे पूछ तो उन लोगों ने कहा आप यहीं रुकिए अभी बुकिंग इंचार्ज के आने पर आपका काम हो जाएगा।

मैंने अपना सामान वहीं रखा और चाय पीने चला गया।

जब मैं लौटा तो मैंने देखा डोरमेट्री इंचार्ज आ गई थी। जी हाँ, वो एक युवती ही थी, करीब तीस-बत्तीस साल की लग रही थी। बेहद सुन्दर, तीखे नाक-नक्श, गोल चेहरा, गोरी रंगत और गठीले बदन की मालकिन थी वो। बहुत ही सादे लिबास में थी वह। कोई बनाव-सिंगार नहीं था उसके चेहरे पर। चेहरे से लगता था कि या तो वह अभी तक कुंवारी है या फिर विधवा। क्यूंकि मांग खाली थी उसकी। मैं किसी निर्णय पर नहीं पहुँच सका।

मैंने खुद को इस उहापोह से निकाला और एक बिस्तर की बुकिंग करवाई। मेरे बेड के नीचे ही एक बड़ा सा बॉक्स था जिसकी चाभी मुझे मिल गई। उसी बॉक्स में अपना सामान रखना था मुझे। मैं अपना सामान रखकर फ्रेश होने चला गया क्यूंकि ग्यारह बजे से मेरी मीटिंग थी।

जब मैं नहा-धोकर अपने बिस्तर पर आया तो वही युवती मेरे पास आई और पूछा- खाना स्टेशन की कैटीन में खायेंगे या बाहर ?

यदि कैटीन में खायेंगे तो ऑर्डर दे दीजिए।

हालाँकि मैं स्टेशन का खाना पसंद नहीं करता था पर ना जाने क्यूँ मैंने ऑर्डर दे दिया। थोड़ी देर में उसने बैरा के हाथों खाना भिजवा दिया।

मैं खाना खा रहा था तो वो आई और पूछने लगी कि मैं कितने दिन रहूँगा तो मैंने बता दिया कि आज दिन में मीटिंग है फिर रात में आराम करूँगा और फिर कल दिन भर मीटिंग करके कल रात की गाड़ी से चला जाऊँगा।

तो उसने आश्वासन दिया कि आपको कोई तकलीफ़ नहीं होगी।

मैंने भी बात बढ़ाने की गरज से पूछ लिया- आप कितने दिन से यहाँ जॉब में हैं ?
उसने बताया- आठ महीनों से।

फिर उसने खुद ही बताया- मेरा नाम मधु है। मेरे पति लखनऊ डिविजन में ही रेलवे में हेड-क्लर्क थे। पर अचानक उनकी मृत्यु के बाद मुझे अनुकम्पा पर यह नौकरी मिल गई। पर कम पढ़ी-लिखी होने के कारण मुझे इस पद पर और इस छोटे से स्टेशन पर नियुक्त हुई है।

मैंने अफ़सोस जताते हुए पूछा- क्वार्टर मिला है या नहीं ?

उसने बताया- अभी तो नहीं, पर अगले महीने एक कर्मचारी रिटायर होने वाले हैं तो एक क्वार्टर खाली होगा, वही मुझे मिल जाएगा।

मैंने पूछा- फिर क्या किराये पर रहती हो ?

मधु- नहीं इसी डोरमेट्री में कहीं सो जाती हूँ। पर आप घबराइए नहीं आपको कोई परेशानी नहीं होगी।

फिर मैं अपने मीटिंग में चला गया। शाम के सात बजे मैं वापस लौटा और कुछ देर आराम करने के बाद मैं बाहर के होटल में खाने चला गया। क्योंकि दिन का खाना मैंने बेमन से ही खाया था।

खाना खाकर जब मैं लौटा तो रात के साढ़े नौ बज रहे थे। मैं सोने का उपक्रम करने लगा।

इतने में मधु आई और मेरा बिस्तर वगैरह का हाल देखकर एक ताड़ के पत्ते का हाथ पंखा बिस्तर पर रख दिया और बोली- यहाँ बिजली का कोई भरोसा नहीं, इसकी जरूरत पड़ सकती है।

फिर वो चली गई। मैं काफी देर तक इंतज़ार करता रहा कि वो भी आएगी जैसा कि उसने कहा था, पर नहीं आई। फिर मुझे नींद आ गई।

करीब एक बजे रात में बिजली गुल हो गई। कुछ देर तक तो मैंने हाथ पंखा से काम लिया

पर वो पर्याप्त नहीं था। अँधेरे में मैंने पूरे हॉल में नजर डाली पर मधु नजर नहीं आई। मैं किसी तरह टटोलते हुए कमरे से बाहर निकला। और सीढ़ी के रास्ते ऊपर छत पर चला गया।

वहाँ मैंने देखा कि फर्श पर ही बिस्तर लगाकर मधु सो रही है। बिस्तर के बगल में गुड-नाईट कॉइल जल रही थी।

मेरे क़दमों की आवाज से वो जग गई और पूछा- कौन ?

मैंने कहा- तुम्हारा मुसाफिर !

उसने पूछा- क्या हुआ ?

मैंने कहा- लाईट चली गई और नीचे बहुत गर्मी है।

तो उसने पूछा- क्या यहीं छत पर बिस्तर लगा दूँ ?

मैंने हामी भर दी।

फिर उसने अँधेरे में ही मेरा बिस्तर लगाया और एक कॉइल बिस्तर के बगल में जलाकर रख दिया। मैं लेट गया। वो अपना बिस्तर समेटने लगी।

मैंने पूछा- कहाँ जा रही हो ?

तो उसने कहा- आपको परेशानी होगी इसलिए नीचे जा रही हूँ।

मैंने कहा- मुझे कोई परेशानी नहीं होगी, तुम सो जाओ यहीं।

फिर वो भी वहीं सो गई।

और कोई बातचीत नहीं हुई। हम दोनों ही सो गए।

अभी मैं अर्धनिद्रा में ही था कि लगा जैसे कोई मेरे जांघ पर हाथ फेर रहा है। मैंने आँख खोलकर देखा तो वो मधु थी। मुझे कुछ अजीब सा लगा, लेकिन अच्छा भी लग रहा था

इसलिए मैं दम साधे पड़ा रहा। कुछ देर जांघ सहलाने के बाद उसका हाथ मेरे लिंग पर आ गया और मैं उत्तेजना में चिहूँक गया, मैं उठ बैठा।

उसने पूछा- बुरा लगा क्या ?

मैंने कहा- नहीं, बुरा तो नहीं लगा पर तुम... ?

उसने कहा- देखिए मैं बुरी औरत नहीं हूँ। पति के मरने के बाद से अभी तक मैं सम्भोग से बचती और तरसती ही रही हूँ। हालाँकि स्टेशन के कई कर्मचारीयों ने मुझ भोगने की कोशिश की पर मैंने उन्हें मौका नहीं दिया। बदनामी के डर से। पर आज पता नहीं क्यों आपको देखकर खुद को रोक नहीं पाई। और आप तो मुसाफिर हैं, पता नहीं फिर आपसे मुलाकात भी हो पाएगी या नहीं तो बदनामी का भी कोई डर नहीं। इसलिए इतनी हिम्मत की मैंने।

मैंने उसका हाथ पकड़ कर अपने करीब खींचा और सीने से लगा लिया। सीने से लगते ही वो रोने लगी। मैंने उस ढाँढस बंधाया और चुप कराया। उसके चेहरे को अपने हाथों में लेकर आँसू से भरे गालों को चूम लिया मैंने।

वो लता के सामान लिपट गई मुझसे। उसके उन्नत वक्ष मेरे सीने से दबने लगे। मुझे अच्छा लगने लगा। फिर मेरे होंठ उसके होंठ पर आकर ठहर गए। तब मुझे पता चला कि वो कितनी गर्म है या हो चुकी है, कितनी आतुर है शारीरिक मिलन के लिए।

उसने अपनी एक टांग मेरे टांग पर रख दिया और अपने योनि-प्रदेश को मेरे जाँघों पर रगड़ने लगी। जैसे मेरी पूरी जांघ को ही अपने योनि में समा लेना चाहती हो।

मेरे होंठ अब तक उसके होंठ को चूसने में ही लगे थे, कि अचानक उसने अपनी जिह्वा को मेरे मुँह में सरका दिया। मैं तो भाव-विभोर होकर उसके जिह्वा को चूसने में मशगूल हो

गया। इतने रसीले होंठ और जिह्वा मैंने अपने जीवन में कभी नहीं पाया था। लेकिन वो मुझसे कुछ ज्यादा ही निपुण थी।

कुछ देर तक मैं चूसता ही रहा कि उसने अचानक अपनी जिह्वा से मेरी जिह्वा को लपेटकर अपने मुँह में खींच लिया और पागलों की तरह चूसने लगी। लगा जैसे मेरी जिह्वा अब टूटकर उसके मुँह में ही रह जायेगी। पर आनन्द भी अपनी पराकाष्ठा पर था।

चुम्बनों के दौर के बीच में ही उसका हाथ फिर मेरे लिंग पर चला गया और लुंगी के ऊपर से ही वो उसे सहलाने लगी।

उसने अपने दूसरे हाथ से मेरा दाहिना हाथ पकड़ कर अपने सीने पर रखा और एक बार जोर से दबा दिया। मैं भी अब धीरे-धीरे उसके उरोजों को ब्लाउज के ऊपर से ही दबाने-सहलाने लगा।

क्या मस्त उरोज थे उसके !गोल, भरे-पूरे और कठोरता और नमी का सम्मिश्रण लग रहे थे।

अब मुझसे रहा नहीं गया। मैंने उसके ब्लाउज के हुक खोलने शुरू किये। उसने भी कोई एतराज नहीं किया बल्कि शरीर को थोड़ा अलग कर मुझे सहयोग ही किया। मैंने पहले तो उसके ब्लाउज को फिर उसके ब्रा को भी उसके शरीर से निकाल दिया।

उसने मेरे सिर को अपने छाती में दबा लिया। अपने गालों पर उसके उरोजों के नरम-नरम, गर्म-गर्म एहसास का मैं वर्णन नहीं कर सकता। फिर उसने अपने हाथ से अपने एक वक्ष को पकड़ कर उसके चुचुक को मेरे मुँह में टेल दिया। मैं भी मस्त होकर उसे चुभलाने लगा। एक चुचुक को मुँह से और दूसरे चुचुक को मैंने अपने हाथों से सहलाने लगा। वो भी जैसे आनंद से सराबोर हो रही थी।

फिर उसने कहा- नीचे नहीं जाना है क्या ?

मैंने जोर से उसके उरोजों को दबाते हुए कहा- क्यों नहीं मेरी जान ।

फिर उसने मेरे शरीर से सभी कपड़ों को हटा दिया और मैंने भी उसे पूरा वस्त्र-विहीन कर दिया । अब वो खुलकर मेरे लिंग से खेलने लगी ।

उसने कहा- बहुत बड़ा और मोटा हथियार है आपका, मेरे पति से भी अच्छा ।

मैं भी अपनी बड़ाई सुनकर खुशी से उसे जोरों से भींच लिया और उसकी जाँघों पर हाथ फिराने लगा । वो मछली की तरह छटपटाने लगी । जैसे ही मेरा हाथ उसके योनि पर पर गया हाथ में पूरा लिसलिसा पानी लग गया, वो पूरी तरह से गीली हो चुकी थी ।

मैंने पूछा- यह क्या, अभी से ही ?

तो उसने जवाब दिया- मेरा तो एक बार हो भी गया ।

मुझे उसके उतावलेपन का एहसास हो गया । फिर मैंने देर नहीं की ।

उसे बिस्तर पर लिटा दिया और उसके टांगों के बीच में आ गया । फिर बिना कुछ कहे मैंने अपने लिंग को उसकी योनि के द्वार पर रखा और एक जोरदार झटका दिया ।

एक ही बार में अपना पूरा लिंग अंदर डाल दिया । हालाँकि पूरा लिंग एक झटके में नहीं गया, लगातार दबाये रखना पड़ा क्योंकि उसकी योनि काफी कसी हुई थी । आखिर बहुत दिनों के बाद वो सम्भोग कर रही थी । पर एक ही धक्के में मैंने उसकी बच्चेदानी को छू लिया ।

उसे शायद थोड़ी तकलीफ़ हुई पर उसने कुछ बोला नहीं, सिर्फ अपने होंठों को भींच लिया और अपनी बाहों को मेरी पीठ पर कस लिया । मैं कुछ देर इसी अवस्था में रहा । कुछ देर

बाद उसके कमर में हलचल महसूस हुई तो मैंने धक्के लगाने शुरू किए।

वो मुस्कराते हुए बोली- आपने तो मेरी जान ही निकाल दी थी।

मैंने उसके होंठों को चूम लिया और अपने काम पर लग गया। करीब पन्द्रह-बीस धक्कों के बाद उसका शरीर अकड़ने लगा और उसकी योनि ने रसों की बरसात कर दी और कुछ निढाल सी हो गई।

मैंने पूछा- थक गई क्या ?

उसने मुस्कराते हुए जवाब दिया- मेरी फिकर छोड़िये, और जब तक आपका पूरा नहीं होता है, तब तक करते रहिये। मुझे कोई परेशानी नहीं।

मैं फिर जोरदार धक्के लगाने लगा। इस बीच वो मेरे पूरे चेहरे पर अपने होंठ और जीभ फिराने लगी। मैं और भी उत्तेजित होने लगा। मैं धक्के लगाते हुए ही उसके चुचूकों को फिर मसलने लगा और उसकी गर्दन पर अपने होंठ फिराने लगा।

अब वो भी फिर से उत्तेजित होने लगी, उत्तेजना में आकर वो भी नीचे से धक्के लगाने लगी।

चूंकि एक बार उसकी योनि से रस निकल चुका था इसलिए हरेक धक्के में फच-फच की आवाज आ रही थी। वो भी मेरे हरेक धक्के का जवाब धक्के से दे रही थी। धक्के की आवाज, उसके चूतड़ों पर मेरे अंडकोषों की टकराहट और फच-फच की आवाज का मिश्रण एक अजीब संगीत का निर्माण कर रही थी। हम दोनों ही आनन्द के सर्वोच्च शिखर पर विचरण कर रहे थे।

कुछ और धक्कों के बाद मुझे लगा कि अब मेरा भी छूटने वाला है तो मैंने पूछा- जान मेरा भी अब होने वाला है, बताओ कहाँ निकालूँ ?

उसने कहा- अंदर ही निकालो जान, बाहर निकालने के चक्कर में अंतिम समय के रगड़ का मजा छूट जाता है।

फिर मैं और दनादन धक्के मारने लगा और कुछ ही धक्कों के बाद मेरी पिचकारी छूट गई। आठ-दस पिचकारी के बाद मैं भी निढाल होकर मधु के शरीर पर ही लेट गया।

करीब एक घंटे तक हम लोग यूँ ही एक-दूसरे से लिपटे रहे। मुझे तो थोड़ी झपकी भी आ रही थी पर मधु मेरे मुरझाये हुए लिंग से खेल रही थी।

फिर मुझे नींद आ गई। वो इसी तरह मेरे लिंग और शरीर पर अपना हाथ फेरती रही। कुछ देर के बाद मैंने महसूस किया कि मेरे लिंग में फिर से तनाव आ रहा है।

मेरी नींद खुल गई। मैंने देखा मधु मेरे उन्नत लिंग को अपने मुँह में लेकर चूस रही है। मुझे जैसे स्वर्गिक आनन्द आ रहा था। कुछ देर में ही लिंग में अत्यधिक तनाव आ गया, लगा जैसे अब फट जाएगा। फिर मैंने देखा मधु मेरे लिंग पर अपने योनि को रगड़ने लगी।

मैंने पूछा- क्या फिर से मजा लेना है ?

मधु ने कहा- बहुत दिनों बाद किया है ना इसलिए एक बार और करना चाहती हूँ। ना जाने फिर कब मौका मिलेगा।

मैंने उसे फिर से चूम लिया। मैं लेटा ही रहा, मधु ने मेरे खड़े लिंग पर अपनी योनि को टिकाया और अपने शरीर का भार देकर पूरे लिंग को अपने अंदर समा लिया, फिर एकाएक तेज धक्के लगाने लगी, कमर को ऊपर नीचे करने लगी।

उसकी गीली योनि में लिंग सटासट आने-जाने लगा पर उसका शरीर भारी होने के कारण वो जल्दी ही थक गई और रुक गई।

बोली- अब मुझसे नहीं होगा, आप ही कीजिये ना !

मैं उसके चेहरे को चूमते हुए उसे अपनी बाहों में जकड़ कर पलट गया और मेरा लिंग पिस्टन की भांति उसकी योनि में चलने लगा। कुछ ही देर में उसने पानी छोड़ दिया। मैं फिर भी रुका नहीं और दनादन झटके लगाता रहा।

कुछ धक्कों के बाद मैं अपने लिंग को योनि के अंदर ठेले हुए ही गोल-गोल घुमाने लगा। वो इस क्रिया से काफी रोमांचित हो रही थी। पन्द्रह-बीस मिनट के बाद मैं भी पसीने-पसीने हो गया और स्वलन के नजदीक आ गया, मधु ने भी मुझे जोर से जकड़ लिया, शायद एक बार फिर वो मंजिल के करीब थी।

दो-चार धक्के के बाद ही हम दोनों एक साथ स्वलित हो गए।

फिर काफी देर तक हम एक दूसरे से आलिंगन-बद्ध रहे। फिर अचानक ट्रेन की सीटी की आवाज से मेरी नींद खुली। स्टेशन के लैम्प-पोस्ट की रोशनी में देखा तो घड़ी में साढ़े तीन बज रहे थे, मैंने मधु को जगाया और उसे नीचे जाने को कहा।

उसने मुझे एक भरपूर आलिंगन में लेकर जोरदार चुम्बन से विदाई दी और नीचे चली गई और फिर मैं सो गया।

यह थी मेरी कहानी, आपको कैसी लगी, जरूर बताना।

